

सेतु दीदी बनकर महिलाओं के लिए पेश की मिसाल

## अब बीएपी के रूप में अपनी सेवा देंगी अलका

सिमडेगा जिला अंतर्गत ठेठईटांगर पंचायत के गड़गड़बहार गांव की रहने वाली अलका देवी अपनी लगन और मेहनत से काफी आगे बढ़ चुकी है। समूह के जरिए वह अपनी आजीविका चला रही है। सेतु दीदी के तौर पर कार्यरत अलका को पदोन्नति मिली है। अब वह जेएसएलपीएस में बतौर बीएपी अपनी सेवाएं देंगी। जुनून और बुलंद इरादों के कारण अलका ने न सिर्फ अपनी विशेष पहचान बनायी है, बल्कि अन्य महिलाओं के लिए मिसाल भी पेश की है।

### आसान नहीं थी सफलता की राह

अलका के लिए बुक कीपर से बीएपी बनने तक का सफर इतना आसान नहीं था। राहित सिंह से शादी होने के बाद वो ससुराल आ गयी, लेकिन यहां से सुकून मिलने के बजाय परेशानियां शुरू हो गयी। पति के पास कोई रोजगार नहीं था। ससुर की कमाई से ही पूरा घर का खर्च चलता था। इस कारण काफी परेशानी होती थी। हर छोटी-मोटी जरूरत के लिए अलका को अपने पति और ससुर पर निर्भर रहना पड़ता था, जिस कारण अलका को काफी दिक्कतों को सामना करना पड़ रहा था। समय बीतता गया और अलका को एक बेटा हुआ। बेटा होने के बाद परिवार का खर्च बढ़ा, लेकिन आमदनी के लिए उनके पास कोई विकल्प नहीं था। वर्ष 2015 में महिला समूह से जुड़ी। समूह की गतिविधियों में सक्रिय रहने के कारण धीरे-धीरे आर्थिक स्थिति में कुछ हद तक सुधार होने लगा।

### एक बार फिर शुरू हुआ सफर

परिवार और सखी मंडल की महिलाओं द्वारा हौसला बढ़ाने से अलका एक बार फिर आगे बढ़ने के लिए तैयार हो गयी। दोबारा अपने काम में लग गयी। बुक कीपर का काम करते-करते अलका को काफी अनुभव हो गया था, इस कारण अब वो सीनियर बुक कीपर बन गयी और अपने प्रखंड के गांवों में जाकर बुक कीपिंग का प्रशिक्षण देने लगी। एक दिन के प्रशिक्षण के लिए अलका को 300 रुपये मिलते थे। इसी तरह अलका ने 18 से 19 बैच को प्रशिक्षण दिया और करीब 35 हजार रुपये की कमाई की।

इन पैसों में कुछ और पैसे मिलाकर अलका अपने लिए एक स्कूटी खरीदी। स्कूटी खरीदने से फायदा यह हुआ कि अलका को बाहर आने-जाने में आ रही समस्या से मुक्ति मिल गयी। अब अलका सेतु दीदी का काम करने लगी। सेतु दीदी का काम करते हुए अलका ने समूह से 20 हजार रुपये का लोन लिया, वहीं सास-ससुर से भी कुछ पैसे लेकर एक ऑटो खरीद

लिया। ऑटोरिक्षा से भी उन्हे अच्छी कमायी होने लगी। अब आर्थिक स्थिति सुधरने पर अलका अपने बेटे को प्राइवेट स्कूल में पढ़ाने लगी।

### **अलका ने बनायी खुद की पहचान**

बुककीपिंग और सेतु दीदी का काम करते-करते पूरे क्षेत्र में अलका की एक अलग पहचान बन गयी। पूरे प्रखंड की महिला समूह की महिलाओं के बीच अलका की लगन और मेहनत की चर्चा होती है। पति को खोने के बाद, जो परिवार टूट चुका था उस परिवार में अलका अपनी मेहनत से खुशियों का रंग भर रही है। अलका की सफलता को देखकर आस-पास की महिलाएं भी प्रेरित हो रही है।

### **प्रकाश स्वयं सहायता समूह से जुड़ी**

अलका की महिला समूह से जुड़ने की कहानी थोड़ी अजीब है। वर्ष 2015 में एक दिन अलका के पति घर के पास ही रास्ते से गुजर रहे थे, तो उन्हें समूह में बैठी हुई कुछ महिलाएं दिखायी दी। पूछताछ करने पर पता चला कि गांव की सक्रिय महिलाएं दूसरी महिलाओं को समूह बनाने का प्रशिक्षण दे रही थी। जानकारी मिलने के बाद अलका के पति रोहित घर आये और अलका को महिला समूह के बारे में बताया। जानकारी मिलते ही अलका उस बैठक में गयी और समूह से जुड़ने के लाभ-हानि के बारे में जाना। पूरी संतुष्टि के बाद अलका प्रकाश आजीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ गयी।

### **समूह से जुड़ने के बाद शुरु हुआ नया सफर**

अलका इंटरमिडियट तक पढ़ी है और फिलहाल दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से स्नातक कर रही है। पढ़ी-लिखी होने के कारण समूह से जुड़ने के बाद अलका को बुककीपर का काम मिला। बुक कीपर का काम करते हुये तीन महीने बीत गये। प्रकाश आजीविका स्वयं सहायता समूह में चक्रिय निधि के 15,000 रुपये आये। उन्होने समूह से 5000 रुपये का लोन लिया और पति के लिए चाट और चाउमिन की दुकान खोली। धीरे-धीरे दुकान से आमदनी अच्छी होने लगी और छह महीने के अंदर ही अलका ने पूरा लोन चुका दिया। अब धीरे-धीरे अलका की जिंदगी पटरी पर आने लगी। बुक कीपर का काम करते हुये अलका गड़गड़बहार ग्राम संगठन की ग्राम संगठन सहायिका बन गयी, जहां से हर महीने अलका को 500 रुपये मिलने लगे। अब अलका को एक साथ दोहरी खुशी मिली। एक तो पति को स्वरोजगार मिल गया, वहीं अलका के पास भी हर महीने कुछ राशि आने लगी।

### **पति की अचानक मौत से टूट गयी थी अलका**

अलका के परिवार में सब कुछ अच्छा चल रहा था, लेकिन मार्च 2016 में एक दिन अचानक अलका के पति को जॉन्डिस की बीमारी हुई। कई जगह इलाज भी कराया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ और उनकी मौत हो गयी। पति की मौत से अलका पूरी तरह टूट चुकी थी। बच्चा छोटा होने के कारण वो दुकान में ध्यान नहीं दे पायी और दुकान बंद हो गयी। एक महीन तक अपने काम से दूर हो गयी। समूह की बैठकों में भी नहीं जाती थी और बुक कीपर का काम भी छोड़ दी थी। इस बुरे दौर में सखी मंडल की महिलाओं ने अलका का भरपुर सहयोग किया। महिलाओं ने समूह के माध्यम से एक मुट्ठी चावल योजना के तहत अलका को दस किलो चावल दिया और ग्राम संगठन की ओर से दो सौ रुपये भी दिये गये। जेएसएलपीएस के प्रखंड स्तर के कार्यकर्ताओं ने भी अलका का हौसला बढ़ाया। सास-ससुर ने भी अलका को बुरे दौर से निकालने में काफी सहयोग किया और उनका मनोबल बढ़ाया। सखी मंडल की महिलाओं और परिवार के सहयोग के कारण ही अलका इस सदमें से उबर पायी और अपनी जिंदगी में आगे बढ़ी।

## **स्वास्थ्य और स्वच्छता पर जोर**

सेतु दीदी का काम करते हुये अलका ग्रामीणों को सरकारी योजनाओं की जानकारी देती है। उन सरकारी योजनाओं का लाभ ग्रामीणों तक पहचाने के लिए मदद भी करती है। अभी तक 169 महिलाओं को विधवा पेंशन का लाभ दिला चुकी है। 225 ग्रामीणों का सुरक्षा बीमा करा चुकी है। 50 परिवारों के लिए राशन कार्ड भी बनवायी है। लगभग 300 लोगों के आधार कार्ड में सुधार करवायी है और कई लोगों के आधार कार्ड बनाने में भी वह सहयोग की है। अलका स्वास्थ्य और स्वच्छता पर भी ग्रामीण महिलाओं को जागरूक करती है। शौचालय निर्माण में भी अलका ने अहम भागीदारी निभायी है। शौचालय निर्माण के दौरान उन्हें कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा। कई लोग शौचालय निर्माण कराने के लिए तैयार नहीं थे, लेकिन आखिरकार उन्हें सफलता मिल गयी। पीको प्रोजेक्टर के जरिये महिलाओं को हाथ धोने के फायदे की जानकारी दी जाती है। गर्भवती महिलाओं के लिए खान-पान और सुरक्षित प्रसव के तरीकों को बताया जाता है। महिलाओं को आंगनबाड़ी से मिलने वाले फायदे, उनके अधिकार को भी सेतु दीदी बताती है। स्तनपान के साथ उपरी आहार कब देना चाहिए और क्या-क्या देना चाहिए, इसके बारे में भी महिलाओं को जागरूक किया जाता है। महिलाओं को दी जा रही जानकारी का असर भी हुआ है। प्रखंड क्षेत्र में गर्भवती महिलाओं और नवजात शिशुओं की हालत में काफी सुधार हुआ है।